राज्य की परिभाषा लिखो तथा इस के आवश्यक तत्वों का वर्णन करे :-

उत्तर साधारण बोल चाल की भाषा मे राज्य शब्द का अर्थ कई अर्थो मे किया जाता है। कुछ लोग इसे सरकार का या देश का या राष्ट्र का या पर्यायवाची शब्द समझ लेते है: जैसे भारत के 28 इकाइयो के लिए भी राज्य शब्द का प्रयोग हुआ है मानव समाज मे राज्य का एक महत्वपूर्ण स्थान है: आज जिस समाज मे हम रहते है: उसकी सब से बड़ी संस्था राज्य ही है: इस समाज मे संगठन का मुख्य आधार राजनीतिक है! इस का निर्माण मनुष्य की सुरक्षा और आवश्यकता ओ की पूर्ति के लिए होता है: इस लिए तो अरस्तु ने लिखा है कि राज्य मानव समुदाय का सर्वोत्तम रूप है यह मानव जीवन के लिए ही उत्पन्न हुआ है!

राज्य शब्द का प्रयोग राजनीति मे एक निश्चित अर्थ मे किया जाता है : राज्य से हमारा मतलब ऐसे व्यक्तियो के समुदाय से है! जो निश्चित प्रदेश मे रहते है ! राजनीतिक दृष्टि से वे संगठित है और अपने आन्तरिक कार्यो के लिए सर्वो[च्च] सत्ता का उपयोग करते है! तथा बाहरी नियंत्रण से मुक्त है! इस तरह किसी निश्चित भूभाग मे शान्ती पूर्ण ढंग से जीवन के लिए संगठित जनता को राज्य कहा जाता है!

परिभाषा :→

राज्य की विभिन्न परिभाषा इस प्रकार है!

ब्लांटशली ने कहा है कि " किसी निश्चित भू-प्रदेश मे राजनीतिक तौर पर संगठित व्यक्तियों को राज्य कहते है!

वुडरो विलसन (Woodrowwilson) ने कहा है कि एक निश्चित भूगाग मे कानून के लिए संगठित जन समुदाय को राज्य कहते है!

बरगैस (Bargess) ने कहा है कि राज्य मनुष्य जाती का एक निश्चित भाग है। जो राजनीतिक इकाई के रूप मे देखा जाता है!

लिकॉक (Leacock) का विचार है कि राज्य एक निश्चित भूगाग मे जनता द्वारा कानून की स्थापना के लिए संगठित समूह का नाम है:-

लॉस्की (Laski) का कहना है कि राज्य एक क्षेत्रीय समाज है जो शासक तथा प्रजा में विभक्त होता है! हुआ इस भूमि क्षेत्र मे सभी संस्थाओं के ऊपर सर्वोच्चता का दावा रखता हो वही राज्य है!

ऊपर दी गई सभी परिभाषाओं, राज्य की सही परिभाषा प्रस्तुत नही कर पाई है! इस लिए प्रो० गार्नर महोदय ने राज्य की सब से अच्छी परिभाषा इस प्रकार दी है!

राज्य किसी निश्चित क्षेत्र मे कम या अधिक व्यक्तियों का ऐसा समुदाय है जो

इस भूभाग में स्थाई रूप से रहता हो : तथा वहा एक ऐसी सरकार हो जिसकी आदेशो के पालन वहाँ के रहने वाले सभी व्यक्तियो स्वभावत: करते है और जो न करते हो व दण्ड के भागी होते वह क्षेत्र या सरकार के आन्तरिक एवं बाहरी रूप से स्वतंत्र हो वही राज्य कहलाता है!

ऊपर की गई गार्नर की परिभाषा मे राज्य से संबंधित सभी बातोकी जानकारी मिलती है। जिसमे सभी आवश्यक तत्व सम्मलित है :-

राज्य के आवश्यक तत्व →

(i) भूभाग।
(ii) जन संख्या।
(iii) सरकार।
(iv) सम्प्रभुता।

(i) भू-भाग ⇒ भूभाग राज्य का दूसरा अनिवार्य तत्व है! बलूशली ने कहा है कि जैसे राज्य का व्यक्तित्व आधार जनता है! उसी प्रकार उसका भौतिक आधार भूमी है: बिना भूमि के राज्य नही हो सकता जैसे 1947 के पहले इजराइल को राज्य नही माना जाता है! क्योकि भूमि के आधार पर ही किसी राज्य के सम्प्रभूता का निर्णय भी एक निश्चित भूगाग के आधार पर ही होता है! जिस मे वह अन्तर्राष्ट्रीय जिम्मे दारियो को पूरा करता है।

भूभाग इतनी होनी चाहिए जितना की वहा की जनसंख्या उस भूभाग मे समा सके तथा अपनी आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक कार्यो को पूरा कर सके।

जन संख्या ⇒

राज्य के तत्वो मे सबसे पहला तत्व जन संख्या है। किसी भी मानव संगठन या संस्था के लिए जन संख्या का होना अनिवार्य है।

राज्य भी मनुष्यो का एक संगठित समुदाय है अत: जन संख्या इसकी प्राथमिक आवश्यकता है। जिस प्रकार शुद्ध के बिना दही और मिट्टी के बिना घरा का निर्माण नही हो सकता, उसी प्रका व्यक्तियो के बिना राज्य का निर्माण नही हो सकता है।

प्रश्न यह उठता है कि राज्य की जन संख्या कितनी होनी चाहिए इस संदर्भ मे प्लेटो महोदय ने कहा है कि 5000 तथा रूसो एवं अरस्तु ने इस की संख्या 10,000 के लगभग बताई है। राज्य अपनी जनसंख्या का समुचित रूप से पालन पोषण करे तथा उनकी आवश्यकता ओ की पूर्ति करे दूसरी ओर चीन जैसे विशाल जन संख्या वाले देश भी है। जहा राज्य अपने जन संख्या का ध्यान रखती है।

इस लिए राज्य की उन्नती और अवनती सदस्यो के गुणो पर निर्भर करती है।

सरकार ⇒

एक निश्चित प्रदेश पर जनता का केवल निवास ही राज्य नही है। राज्य कहलाने के लिए राजनीतिक संगठन का होना अती आवश्यक है। इस के लिए एक शासन होना चाहिए जिसे सरकार कहते है। और वह सकार जनता की आवश्यकता को ध्यान मे रखता कर कार्य करे सरकार के कई रूप हो सकते है। जैसे, राजतंत्र कुलीन तंत्र अधिनायकतंत्र, तानाशाही, सैनिकतंत्र प्रजातंत्र इत्यादि इसलिए अच्छी सरकार वही जो जनता का अधिक से अधिक कल्याण करे जिसे हम कह सकते है कि "The greatest means of the greatest good." अधिक से व्यक्तियो का अधिक से अधिक कल्याण।

समप्रभुता ⇒

राज्य के अन्तीम और आवश्यकता तत्व सम्प्रभुता है। समप्रभुता ही राज्य का प्राण कहा जाता है। इस के बिना राज्य पूर्ण राज्य नही कहला सकता है। अत: संप्रभुता वह है। जिस मे राज्य आन्तरिक एव बाहरा रूप से स्वतन्त्र हो तथा वह किसी के अधिन न रह कर अपना वास्तविक कार्य करे उदाहरण के लिए कह सकते है की: 1947 के पहले भारत के

अपनी सम्प्रभुता प्राप्त नहीं की इसी प्रकार
राज्य के चार आवश्यक तत्व राज्य होने
के लिए जो है: परन्तु इस आधुनिक युग
मे राज्य के आवश्यक तत्वों मे है!
जिसे हम मान्यता Recogination कहते है!
उदाहरण के लिए फिलिस्तीन
दक्षिण अफ्रीका इत्यादि !

The End